कहानी की परिभाषा एवं तत्व

गद्य और पद्य साहित्य की दो शैलियां हैं।गद्य के कथात्यक साहित्य में कहानी सबसे अधिक लोकप्रिय हैं।कहानी कथा,गल्प इत्यादि विभिन्न नामों से प्रसिद्ध हैं

- कहानी को परिभाषित करने का प्रयत्न विभिन्न विद्वानों ने किया।,परन्तु कहानी को किसी भी सीमा मे बांधना असम्भव हैं अनेक विद्वानों ने इसकी कई परिभाषाएं दी हैं।

एडगर एलन पो के अनुसार-

“कहानी एक ऐसा आख्यान हैं जो इतना छोटा होता हैं कि एक ही बैठक में पढ़ा जा सके”

एच जी वेल्ज के अनुसार-

“कहानी वह गद्य कथा हैं जो बीस मिनट में पढ़ी जा सके”

अलब्राइट-

“कहानी वही समाप्त हो जानी चाहिए जहां सेआगे बढ़ने का कोई विशेष कारण न हो”

विलियम हैनरी हडसन-

“कहानी रूपरेखा में पूर्णतः स्पष्ट,संतुलित, उद्देश्य के लिए पर्याप्त विस्तृत किन्तु भीड़भाड़ के तनिक भी संकेत सें रहित और अपने ताने बाने में पूर्ण होनी चाहिए”

जेम्स डब्ल्यू-

“किसी एक पात्र के जीवन में आने वाले किसी मोड का संक्षिप्त और नाटकीय ढ़ग से किया गया चित्रण ही कहानी हैं”

प्रेमचंद के अनुसार-

“गल्प (कहानी)ऐसी रचना हैं जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता हैं”

अज्ञेय के अनुसार-

“कहानी जीवन की प्रतिच्छाया हैं और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी हैं,शिक्षा हैं,जो उम्रभर मिलती हैं और समाप्त नही होती”

कहानी के तत्व

- शीर्षक
- कथानक
- पात्र व चरित्र चित्रण
- संवाद
- वातावरण
- भाषा शैली
- उद्देश्य

- शीर्षक-

कहानी का शीर्षक रोचक,संक्षिप्त, जिज्ञासावर्धक,प्रतीकात्मक व मूलभाव होना चाहिए।

- कथानक-

डां रामकुमार वर्मा- “कथानक में प्रथम बात जो देखनी चाहिए वह हैं प्रवाह”

- कथानक के विकास की चार अवस्थाएँ हैं-।

*आरम्भ

*आरोह

*चरम सीमा

*अवरोह

- पात्र एवं चरित्र-चित्रण-

* पात्र कथानक के वाहक होते हैं।

*पात्र सजीव, स्वाभाविक तथा स्वतंत्र होने चाहिए।

*चरित्रप्रधान कहानियों में प्रेमचंद का प्रमुख स्थान हैं ‘बड़े घर की बेटी’, ‘बूढ़ी काकी’,’मुक्ति मार्ग’ आदि प्रसिद्ध चरित्रप्रधान कहानियां हैं।

- संवाद-

डां जगन्नाथ के अनुसार- “संवाद जहां एक ओर कथा के प्रसार का मुख्य साधन हैं वहीं चरित्रोद्घाटन का भी,साथ ही वह देशकाल का भी पर्याप्त बौध करा देता हैं”

-संवाद सजीव, रोचक व संक्षिप्त हो।

- वातावरण –

वातावरण विषयानुकूल होना चाहिए।

एन.ए लेन के अनुसार- “स्थानीय वातावरण ,स्थानीय चित्रण पाठक को विशेष रूप से प्रभावित करता हैं।”

- भाषा-शैली-

कहानी की भाषा सरल,स्पष्ट, स्वाभाविक ,रोचक एवं संकेतात्मक ,साधारण, बोलचाल की होनी चाहिए।

मुंशी प्रेमचंद- “कहानी की भाषा बहुत ही सरल और सुबोध होनी चाहिए”

- उद्देश्य-

पाश्चात्य आलोचक का कथन हैं- “कहानी का लक्ष्य मानव- मन के विश्लेषण दवारा प्रभाव उत्पन्न करना हैं.....यह उद्देश्य जिस कहानी में हो वह उत्कृष्ट कोटि की कहानी हैं”

निष्कर्षत:यह सभी तत्व सम्मिलित होकर कहानी को सम्पूर्णता प्रदान करते हैं इन सभी तत्वों के समावेश से ही सफल कहानी की सृजना होती हैं

धन्यवाद

पवन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग
हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर